डॉ० ओमप्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 05/08/2020

Page No.:

विषय- संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र
किरातार्जुनीयम् - प्रथम सर्ग
पद्यांश व्याख्या।

निरत्ययं साम न दानवर्जितम्
न भूरिदानं विरहय्य सत्क्रियाम्।
प्रवर्तते तस्य विशेषशालिनी
गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया ॥2॥

अन्वयः- तस्य निरत्ययं साम दानवर्जितं न प्रवर्तते। भूरिदानं सत्क्रियां विरहय्य न (प्रवर्तते) विशेषशालिनी सत्क्रिया गुणानुरोधेन विना न प्रवर्तते।

भाषार्थ- (तस्य निरत्ययं साम दानवर्जितं न प्रवर्तते) उस सुयोधन का निर्विघ्न साम नीति का प्रयोग धनदान के बिना नहीं होता। (भूरिदानं सत्क्रियां विरहय्य न प्रवर्तते) प्रचुर धनदान भी समुचित सत्कार के बिना नहीं होता। (विशेषशालिनी सत्क्रिया गुणानुरोधेन विना न प्रवर्तते) विशेष प्रकार का सत्कार भी गुणों का विचार किये बिना नहीं होता। अर्थात् वह जिसे प्रचुर धन देता है उसका सत्कार भी करता है और जब किसी का विशेष सत्कार करता है तब उसके गुणों का भी विचार करता है।

भावार्थ- साम, दाम, दण्ड, भेद चार उपायों के प्रयोग के सन्दर्भ में दुर्योधन द्वारा अपनायी गयी साम और दान की नीति का उल्लेख इस पद्य में किया गया है।

Scanned with CamScanner

Date __/__/__

पदव्याख्या- निरत्ययम् = सफल, बाधारहित, निर्गतः अत्ययः यस्मात् (बहु०). अत्ययः = अति+इ+अच् (भावे)। साम = सान्त्वना का उपाय, सन्तोष देने वाली नीति, दानवर्जितं न = दानरहित नहीं होती, दानेन वर्जितं दानवर्जितम् (तृ०तत्पु०) दा+ल्युट् = दानम्। वर्जितम् = वृज्+णिच्+क्त। भूरिदानं सत्क्रियां विरहय्य न = प्रचुरदान सत्कार को छोड़कर नहीं होता अर्थात् सत्कार के साथ प्रचुर दान देता है। भूरि = प्रभूत, प्रचुर। सत्क्रिया = सत् तस्य क्रिया सत्क्रिया, ताम्। अस्+लट्+शतृ = सत्। आदर और अनादर के अर्थ में क्रमशः सत् और असत् अव्यय होते हैं। (आदरानादरयोः सदसती) विरहय्य = छोड़कर, वि+रह+णिच्+क्त्वा (ल्यप्)। न प्रवर्तते = नहीं होता। प्र+वृत्+लट् = प्रवर्तते। तस्य = उसकी। विशेषशालिनी = विशेषरूपवाली, असामान्य (सत्क्रिया का विशेषण) विशेष सम्मान से युक्त। विशेषेण शालते इति विशेषशालिनी। विशेषः = वि+शिष्+घञ्। शाल्+णिनि (कर्तरि) ताच्छील्ये = शालिनी। गुणानुरोधेन बिना न = गुणों के विचार के बिना नहीं होती अर्थात् विशेष रूप से सत्कार करते समय गुणों का विचार करके ही विशेष सत्कार करता है। गुणानामनुरोधः (ष० तत्पु०), तेन गुणानुरोधेन। बिना के योग में तृतीया।

अनु+रुध्+घञ् = अनुरोधः।

टिप्पणी- इस पद्य में एकावली अलंकार है। एक एक बात को छोड़कर आगे पदार्थ का विशेषण दिया गया है। इति।

Scanned with CamScanner